ISSN 097-6459 www.shodh-prakalp.com शोध–प्रकल्प
त्रैमासिकं रिसर्च जर्नल

जनपदीय रचनाकार डॉ.पालेश्वर प्रसाद शर्मा

डॉ.अभिनेश सुराना
प्राध्यापक(हिन्दी विभाग)
श्रीमती तारा त्रिपाठी
शोध छात्रा
शा.वि.ता.स्व.महा.दुर्ग

डॉ. शर्मा इस तथ्य से सुपरिचित हैं कि जनपद को जानना और जाँचना केवल 'आंचलिक अध्येता' का अधिकारी ही नहीं बनता, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति भी प्रदान करता है क्योंकि देश–विदेश के ज्ञान के समानांतर जनपद/अंचल का अन्वेषण अत्यावश्यक है। यही नव्यता उनके प्रदेय को भव्यता प्रदान करती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक कलाकार अपनी दृष्टि को नयी अभिव्यंजना देना चाहता है। यही कारण है कि उसमें विविधता आती चली जाती है और विशेषताओं में भी वृद्धि अस्तित्व से ही निर्मित होती है इसीलिए उसकी वाणी में अतीत की अनुभूति और वर्तमान का यथार्थ और भविष्य की कल्पना तीनों के साथ जीवन और जिजीविषा के आग्रह का स्वर मिलता है। स्वतंत्रता के पश्चात् छत्तीसगढ़ के अन्य कथाकारों के साथ डॉ. शर्मा भी साहित्य के क्षेत्र में आए। इस कारण कथ्य के स्तर पर प्रयोगपरकता आयी। विशेषकर ग्रामीण तथा निम्नवर्गीय जीवन परिवेश के साथ ही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, आर्थिक रेखांकन मिलता है। शिल्प और स्थापत्य में भी प्रयोग मिलता है।[1]

छत्तीसगढ़–प्रदेश के प्रतिष्ठित जनपदीय रचनाकारों में डॉ.पालेश्वर प्रसाद शर्मा का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा के माध्यम से छत्तीसगढ़ के साहित्य और संस्कृति को प्रदेश के बाहर भी प्रतिष्ठित किया है। जाजल्यदेव की नगरी जांजगीर में जन्मे डॉ. शर्मा माटी–पुत्र हैं। इन्होंने अपनी जमीन खुद तैयार की और उस पर स्वयं चले भी। इनका जीवन शून्य से क्षितिज तक पहुँचने की यात्रा का इतिवृत्त है। छह दशकों से सतत् साहित्य–साधना में संलग्न रहकर इन्होंने हिंदी और छत्तीसगढ़ी रचनाधर्मिता को जो कुछ दिया है, वह जनपदीय रचनाकार की अमूल्य धरोहर ही है। इनका मार्गदर्शन लेकर इक्कीसवीं सदी की पीढ़ी प्रोन्नत–परिपुष्ट होगी, ऐसी आशा सहज ही सुदृढ़ हो जाती है।

डॉ. शर्मा को लेखन की प्रेरणा भले ही विद्यालय में हिंदी शिक्षक से मिली हो और महाविद्यालय के छात्र–जीवन में मुखरित होने का अवसर उपलब्ध हुआ हो लेकिन उनकी सृजन की दशा और दिशा समसामयिक देशकाल की परिस्थितियों के प्रभाव के कारण प्रस्फुटित हुई और इसके लिए उन्होंने अपने परिवेश, जनपद/अंचल (अब प्रदेश) को बतौर प्रयोग चुना। इसके बाद उनका सृजनोद्देश्य छत्तीसगढ़ की अस्मिता के अन्वेषण पर केंद्रित हो गया। उन्होंने छत्तीसगढ़ के अतीत का जब अध्ययन किया तब उन्हें आभास हुआ कि यह जनपद ऐतिहासिक दृष्टि से गौरवशाली पृष्ठों को ही नहीं समेटता, वरन् सांस्कृतिक दृष्टि से भी संपन्न और सामर्थ्यवान रहा है। इस तरह पुरातत्व और इतिहास की ओर उनका झुकाव हुआ और इसके माध्यम से उन्होंने छत्तीसगढ़ के ज्ञाताज्ञात महत्वपूर्ण स्थलों को साहित्य के माध्यम से संजोने का प्रयास किया। इनकी कहानियों में किंवदंतियों और कल्पना का सामंजस्य इतिहास के पृष्ठ को उजागर करने और प्रकारांतर में संस्कृति को रेखांकित करने की दृष्टि से ही कारगर हुआ है। यही भाषा के माध्यम से शोध और समीक्षा को भी समेटता है और निबंध को भी निबद्ध करता है। इस तरह इनके हिंदी और छत्तीसगढ़ी साहित्य का समग्र अवदान आंचलिकता की अभिव्यक्ति के आधार पर जनपदीयता की ही पड़ताल करता है। इस अर्थ में डॉ. शर्मा का जनपदीय रचनाकार के रूप में मूल्यांकन आज की गहती आवश्यकता कही जा सकती है।

डॉ. शर्मा इस तथ्य से सुपरिचित हैं कि जनपद को जानना और जाँचना केवल 'आंचलिक अध्येता' का अधिकारी ही नहीं बनता, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति भी प्रदान करता है क्योंकि देश–विदेश के ज्ञान के समानांतर जनपद/अंचल का अन्वेषण अत्यावश्यक है। यही नव्यता उनके प्रदेय को भव्यता प्रदान करती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक कलाकार अपनी दृष्टि को नयी अभिव्यंजना देना चाहता है। यही कारण है कि उसमें विविधता आती चली जाती है और विशेषताओं में भी वृद्धि अस्तित्व से ही निर्मित होती है इसीलिए उसकी वाणी में अतीत की अनुभूति और वर्तमान का यथार्थ और भविष्य की कल्पना तीनों के साथ जीवन और जिजीविषा के आग्रह का स्वर मिलता है। स्वतंत्रता के पश्चात् छत्तीसगढ़ के अन्य कथाकारों के साथ डॉ. शर्मा भी साहित्य के क्षेत्र में आए। इस कारण कथ्य के स्तर पर प्रयोगपरकता आयी। विशेषकर ग्रामीण तथा निम्नवर्गीय जीवन परिवेश के साथ ही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, आर्थिक रेखांकन मिलता है। शिल्प और स्थापत्य में भी प्रयोग मिलता है।[1]

डॉ. शर्मा जी छत्तीसगढ़–आंचलिक कथाकार हैं। इन्होंने हिंदी कथा के माध्यम से जहाँ छत्तीसगढ़ को केंद्रस्थ किया, वहीं छत्तीसगढ़ी कथा के माध्यम से संस्कृति और इतिहास के समृद्ध और सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत किया। इस दृष्टि से इनका 'तिरिया जनम झनि देय' जहाँ छत्तीसगढ़–आंचलिक कहानियों का संग्रह है, वहीं 'सुसक झन कुररी! सुरता ले!!' छत्तीसगढ़ी कहानियों का संकलन है। 'तिरिया जनम झनि देय' में छत्तीसगढ़–अंचल स्पंदित है। डॉ. अभिजित तिवारी के अनुसार– 'शर्मा जी की रचनाओं का मूल धरातल जीवन का यथार्थ है। ग्रामीण परिवेश है, लोक–संस्कृति परिधान है, लोककथात्मक शैली है और आंचलिकता उसकी आत्मा है। छत्तीसगढ़ी कथा–साहित्य भी शोषित जन का साहित्य है जिसमें थोड़ा ऊहापोह है, थोड़ी कश्मकश भी है, थोड़ी संघर्षशीलता भी है। कथाकार शर्मा प्रेमचंद को अपना पूर्वज कहते हैं और निश्चय ही वे परवर्ती कथाकार हैं। प्रेमचंद के बाद कथा–साहित्य में कई नए दौर प्रारंभ हुए। नई कहानी, समानांतर कहानी, अकहानी, आंचलिक कहानी आदि विधा के विविध रूप आये जिनमें यदि आधुनिक जीवन की विसंगति, विषगता और विडम्बना की अभिव्यंजना है तो आंचलिक कहानियों में अंचल विशिष्ट नायक के रूप में आता है। हिन्दी साहित्य में सफल आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु हैं और शर्मा जी भी रेणु के समकालीन छत्तीसगढ़ के आंचलिक कथाकार हैं।'[2] डॉ. मीता अग्रवाल के अनुसार – 'डॉ. पालेश्वर शर्मा के लेखन में छत्तीसगढ़ का जीवन झलकता है। छत्तीसगढ़ के धूल भरे गाँव, नदिया, नम झरनों, धान के खेत–खलिहानों, यहाँ की समस्याओं से जुड़ता ग्रामीण मन, उसकी सरलता, भोलेपन, उनके निबंधों में ललित कथाओं में उभरकर सामने आता है। सर्वहारा वर्ग को अपने साहित्य को मूल विषय बनाने के कारण वे छत्तीसगढ़ के प्रेमचंद कहे जा सकते हैं।'[3]

शर्मा जी राउतनाचा, बाँसगीत और सुआगीत के प्रति विशेष लगाव रखते ही नहीं, अपितु इन गीतों के कलात्मक पहलू एवं बॉडी लेंग्वेज पर भी इनका ज्ञान और पकड़ विस्तृत हैं। देवार, ददरिया आदि लोकगीतों के संवर्धन हेतु सदैव प्रत्यनशील रहे हैं। डॉ. शर्मा ने अपनी रचनाओं में छत्तीसगढ़ के लोकगीत, रीति–रिवाज, पारिवारिक परिवेश और कृषक संसार को एक पहचान दी है।[4]

डॉ. शर्मा कृत छत्तीसगढ़ी कहानियों का संग्रह 'सुसक झन कुररी! सुरता ले!!' आंचलिकता की आधार–भूमि है।

डॉ. विनय कुमार पाठक लिखते हैं– "छत्तीसगढ़ी काव्य के क्षेत्र में जो स्थान बाबू रेवाराम, पंडित सुंदरलाल शर्मा व पंडित द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का है, छत्तीसगढ़ी कथा–साहित्य में वही स्थान डॉ. पालेश्वर शर्मा का है। उनकी 'भोजली' और 'सुसक झन कुररी सुरता ले' में संग्रहीत कहानियों को पढ़कर कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी गद्य की साहित्यिक भाषा का यदि कहीं आदर्श स्वरूप है, लोकोक्तियों और सूक्तियों का कहीं कोई सहज भाव, कथा, कल्पना व विचार के साथ सामंजस्य है तो वह इन्हीं कहानियों में केंद्रित है।'[5] छत्तीसगढ़–जनजीवन का यथार्थ निरूपण इसका वैशिष्ट्य है। इस कहानी–संकलन का नाम ही इस बात की ओर इंगित करता है कि धरा–पुत्रों का क्रंदन कुररी के केंकार में प्रतिध्वनित हो रहा है। धरती–पुत्र अपने ही अंचल में विदेशी विहंग–सदृश पंक्ति से बिछुड़कर असहाय और एकाकी हो जाते हैं। कुररी सिसक कर रो रही है। लेखक चाहता है कि वह थोड़ा रूककर विराम कर ले, रूदन तो आवश्यक ही है किन्तु उसे आशा है कि कभी तो उसका रूदन हास में परिणित होगा। धरती की सुगंध और परम्परा का पराग इस कथा–गुच्छ में संकलित है।

यह तो स्वीकार करना ही होगा कि छत्तीसगढ़ी भाषा की ध्वन्यत्मकता उसकी निजी विशेषता है। हिंदी के अक्षरों के स्थान पर उन्तालीस शब्दों की लघु सीमा में अभिव्यंजना–शक्ति को परिधान प्रदान करना सरल नहीं है। छत्तीसगढ़ी साहित्य को यहाँ की लोकसंस्कृति ने काफी विस्तार दिया, शब्द दिए हैं, परंपरा दी हैं। उसी प्रकार वनवासियों ने रीति–नीति, प्रथा–पूजा, अनुष्ठान के द्वारा भी छत्तीसगढ़ी भाषा को प्रतिष्ठा दी है। छत्तीसगढ़ी भाषा के विस्तार में वनवासियों की अपनी उपभाषा घुल–मिल गयी। देवारी, पनकी, गोंड़ी, बैगी आदि बोलियाँ छत्तीसगढ़ी में समाहित हो गयी हैं। भाषा के प्रवाह में ऐसा संभव है।[6]

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा जी आज भी साहित्य के क्षेत्र में साधनारत् हैं। व्यक्ति–प्रचार की भावना से परे शर्मा जी का व्यक्तित्व 'सादा जीवन उच्च विचार' का जीवंत प्रतीक है। वे अपनी साधना के द्वारा माँ सरस्वती की अर्चना, आराधना और छत्तीसगढ़ की सेवा के प्रति समर्पित हैं। उनकी लेखनी अभी थमी नहीं है। जिस प्रकार एक सुनिश्चित–सुव्यवस्थित विचार वाले व्यक्ति का ज्ञानकोश कभी रिक्त नहीं होता, वह सदैव वर्तमान रहता है, उसी प्रकार से शर्मा जी का अनुभव–संसार निरंतर विकास पर है। उनकी भावाभिव्यक्ति, भाषा–प्रयोग आदि में आज भी ऊर्जा और निखार आता जा रहा है। उनकी सदैव लालसा रहती है कि आज की युवा पीढ़ी को वे कुछ दे सकें। उनका मानना है कि किसी भी देश या समाज की संस्कृति वहीं फलती–फूलती और महकती है जहाँ की हस्तांतरणीय परंपरा अधिकाधिक समृद्ध और उदार होती है। शर्मा जी इस परंपरा के जीवंत संवाहक हैं। उनके सम्मान में चार पंक्तियाँ समर्पित हैं –

हम तो चावल हैं पुराने दुबराज
जितना महकना था महक लिये
अब तुम्हारी बारी है
आओ बढ़कर थाम लो हमारी ऊंगलियाँ
हमसे भी ज्यादा महकने के लिये।।

ऐसी जिजीविषा से भरे उस महान व्यक्तित्व के लिये ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनके सुदीर्घ जीवन को कर्मगय बनाये ताकि यह तपः पूत अपनी साहित्य–साधना के माध्यम से देश, प्रदेश, भारतीय संस्कशति, धर्म एवं मानवता की सेवा करते हुये शतायु हों। इन शब्दों के साथ –

मैं अभी पका नहीं हूँ
उग रहा हूँ
इच्छाओं से भरा
हरी कोख में आ रहा हूँ।[7]

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी अभिजीत, डॉ.पालेश्वर शर्मा अभिनंदन ग्रंथ, संपादकः डॉ.गिरधर शर्मा, छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद् बिलासपुर, 2008
2. तिवारी अभिजीत, डॉ.पालेश्वर शर्मा अभिनंदन ग्रंथ, संपादकः डॉ.गिरधर शर्मा, छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद् बिलासपुर, 2008
3. पाठक विनयकुमार, अरपा तीरे सहस्त्र चंद्रदर्शन, बिलासा कला मंच, बिलासपुर, 2007
4. पटेल, जी.डी., डॉ.पालेश्वर शर्मा अभिनंदन ग्रंथ, संपादकः डॉ.गिरधर शर्मा, छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद् बिलासपुर, 2008
5. पाठक विनयकुमार, अरपा तीरे सहस्त्र चंद्रदर्शन, बिलासा कला मंच, बिलासपुर, 2007
6. तिवारी अभिजीत, डॉ.पालेश्वर शर्मा अभिनंदन ग्रंथ, संपादकः डॉ.गिरधर शर्मा, छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद् बिलासपुर, 2008
7. पाठक विनयकुमार, अरपा तीरे सहस्त्र चंद्रदर्शन, बिलासा कला मंच, बिलासपुर, 2007

■